आचार्य नयसेन

जीवन-परिचय : आचार्य नयसेन त्रैविद्यचक्रवर्ती नरेन्द्रसेन के शिष्य थे। नरेन्द्रसेन अपने समय के बहुत प्रभावशाली विद्वान हुए हैं।

आचार्य नयसेन का जन्मस्थान धारवाड़ जिले का मूलगुन्दा नामक तीर्थस्थान है। नयसेन मुनि उच्चकोटि के तपस्वी और द्वादशांग शास्त्र के विद्वान थे। यह संस्कृत, तमिल और कन्नड़ के धुरन्धर विद्वान थे। ये विविध उपाधियों से अलंकृत थे। ये मल्लिषेण के गुरु जिनसेन के सधर्मा थे।

इनके ग्रन्थ धर्मामृत में ग्रन्थ-रचना का समय दिया हुआ है। इससे इनका समय ई. सन् की 12वीं शती का पूर्वार्द्ध सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : आचार्य नयसेन के दो ग्रन्थों का निर्देश उपलब्ध होता है—

1. धर्मामृत : धर्मामृत में 14 रोचक कथाएँ हैं। इन कथाओं द्वारा धर्मतत्त्व का उपदेश दिया गया है। आचार्य ने सम्यग्दर्शन और उसके आठ अंग और पाँच व्रतों की कथाओं के माध्यम से श्रावकाचार का विस्तृत वर्णन किया है। इस ग्रन्थ की भाषा कन्नड़ी है, जो बहुत ही सुन्दर, ललित और शुद्ध है।

इस ग्रन्थ की रचना ई. सन् 1112 के लगभग हुई है।

2. कन्नड़ भाषा का व्याकरण : दूसरा ग्रन्थ कन्नड़ भाषा का व्याकरण है, जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।